शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

परम्परागत जनसंचार माध्यम और ग्रामीण जीवन

विकास ठाकुर (शोधार्थी)
डॉ.भीमराव अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय
अम्बेडकर नगर
महू, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत में सूचना क्रांति का असर दूर-दराज की गावों तक हुआ है। जनसंचार के बदलते माध्यमों ने ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। जिन गावों तक संचार क्रान्ति पहुँची है, वहां के लोगों में चेतना का भिन्न स्तर दिखाई देता है। इस ज्ञान से वे अपने लिए विकास की नयी संभावनाएं तलाश रहे हैं। इसके बावजूद परम्परागत संचार माध्यमों की प्रासंगिकता बनी हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र में परम्परागत जनसंचार माध्यम और ग्रामीण जीवन पर विचार किया गया है।

भूमिका

जनसंचार का उपयोग ग्रामीण स्तर पर तीव्र गति से हो रहा है। आज के समय में इन्टरनेट और मोबाईल के उपयोग से ग्रामीण जीवन प्रभावित हुआ है। ग्रामीण जीवन में लोग जनसंचार माध्यमों का उपयोग अपने हितों के लिये कर रहे हैं। जनसंचार का सामान्य अर्थ होता है लोगों के आपस में विचारों, भावों और ज्ञान आपस में साझा करने से है, जबकि संचार का अर्थ एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी विचारों और भावनाओं को दूसरे तक पंहुचाने का कार्य संचार कहलाता है। इनके अंतर्गत जनसंचार का रूप व्यापक होता है, जिसमें प्रतिपुष्टी मिलने की सम्भावना कम रहती है। जनसंचार का उपयोग ग्रामीण जीवन पर प्रभावित करता है।

संचार एक ऐसी क्रिया है, जिसके बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। संचार एक बड़ी भूमिका मानव सभ्यता के विकास में की जा रही है। संचार को अंग्रेजी भाषा में कम्युनिकेशन कहा जाता है। जो लैटिन भाषा के कम्युनिस बना हुआ है। जिसका अर्थ है व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं को पारस्परिक आधार पर एक-दूसरे को आदान-प्रदान करता है।

संचार की प्रक्रिया

एक ही समय में बहुत बड़े समूह तक अपनी बात को पहुंचाना जनसंचार कहलाता है। इसके अंतर्गत समाचार-पत्र और पत्रिकाएं, जर्नल, रेडियो, टेलीविजन, सोशल मीडिया समाहित हैं। जनसंचार की परिभाषा : डेनिस मैकवेल के अनुसार, "जनसंचार वह प्रक्रिया है, जो समूहों के समान भाव का सृजन करती है। समान भाव को विकसित कर एकमत पैदा करती है तथा पुष्ट बनाती है। जब तक समूह किसी बात पर सहमत नहीं होंगे, तब तक स्वाभाविक है कि संवाद की प्रक्रिया अधूरी रहेगी।"

पारम्परिक संचार

पारम्परिक संचार माध्यम के अंतर्गत हम जो भी हमारा प्राचीन संचार माध्यम है उसे पारम्परिक

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संचार कहा जाता है। इसके अंतर्गत नाटक, कहानी, मेले, कठपुठली, खेल-तमाशा, लोकगीत-संगीत आदि पारम्परिक संचार माध्यम के अंतर्गत समाहित होते हैं। इसे ही पारम्परिक संचार माध्यम कहा जाता है।

परम्परागत संचार माध्यम मनुष्य को पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे पूर्वजों के माध्यम से प्राप्त होते हैं और यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिलता है और आज भी इसे आगे की ओर अग्रेषित किया जा रहा है। वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिता और क्रियाशीलता बनी हुई है। इसका स्वरूप प्रायः सांस्कृतिक होता है। इसलिए इसका प्रभाव व्यापक और भावनात्मक होता है। ऐसे माध्यम सामाजिक, पर्व, त्यौहार भौतिक एवं भाववेषी प्रतिपूर्तियों के उपकरण होते हैं, जिनकी आवश्यकता उन भाषायी समूहों को होती हैं, जिनसे वे संबद्ध होते हैं।

परम्परागत जसंचार माध्यम प्राचीन होते हुए भी जड़ और रूढ़ नहीं होते। वे नवीन भाव-विचार और परिवर्तनों को भी अपने में समाहित करते चलते हैं, बल्कि इनका अस्तित्व युग के अनुसार बदलते परिदृश्यों को आत्मसात करते चलते रहने के कारण ही संभव होता है। इसी आधार पर वे गतिशीलता बने रहकर व्यवहार में आते रहते हैं। ये माध्यम सदियों से समाज में विभिन्न प्रकार के अंत:समूहों तथा अंतः ग्राम स्तर पर संचार की प्रक्रिया को बनाए हुए हैं। ये माध्यम स्वयं भी अभी तक इसीलिए बने हुए हैं कि ये लोगों की जरूरतों को पूरा करते हैं, क्योंकि जनसंचार का काई भी माध्यम लोगों की जरूरत पूरी करने की सामर्थ्य रखने तक ही बना रहता है। परम्परागत संचार माध्यम श्रव्य, दृश्य-श्रव्य रूपों में इस जरूरत को पूरा करते हैं। लोकगीत-संगीत, लोककथा, कथा-वार्ता, मूर्ति एवं वास्तुकला, शिलालेख, परम्परागत डिजाईन, लोकनाट्य-रामलीला, कठपुतली, तमाशा, नौटंकी आदि विधाएं तथा उत्सव पर्व त्यौहारों, मेलों, सामाजिक संस्थानों और व्यवसायों में परम्परागत संचार माध्यमों के उपर्युक्त रूप अपनी उपस्थिति और लोकप्रियता दर्ज कराते हैं।

नाटक

संचार के परम्परागत एवं प्रत्यक्ष दृश्य माध्यमों में नाटक अत्यन्त प्राचीन हैं। पूर्व और पश्चिम के सभी विद्वानों ने एक तरफा समूह-संचार के माध्यम के रूप में उसकी उपयोगिता एवं प्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति को समान रूप से स्वीकार किया है। संस्कृत के आचार्य भरत मुनि ने 'नाट्य-वेद' की उत्पत्ति के विषय में चर्चा करते हुए उसके शुभ-अशुभ परिणाम' पर भी विस्तार से विचार किया है। इस प्रभाव को ही जनसंचार की भाषा में 'सन्देश का प्रभाव और उसकी प्रतिक्रिया' कहा जा सकता है। युग की आवश्यकता, परिवेश और उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार 'नाट्य' के विषय, रूप एवं आकार-प्रकार बदलते रहते हैं।

मेले

मेले का उद्देश्य लोगों को एकत्रित कर सांस्कृतिक रूप से आपस में पारम्परिक संचार के माध्यम द्वारा आपस में संचार का आदान-प्रदान करवाना है या मेल मिलाप होता है। मेले के आयोजन में हजारों, लाखों लोग एकत्रित होते है किसी ख़ास मकसद के लिये इसलिए प्राचीन काल से परम्परा चली आ रही है मेले के आयोजन की आज भी इसकी प्रासंगिकता देखी जाती है।

लोकगीत

प्राचीन समय से ही लोकगीत की मान्याता को आगे बढ़ाया गया है प्राचीन समय के लोग पहले अपना मनोरंजन करने लिये लोकगीत सुनकर ही

करते थे। इसमें क्षेत्रीय गायक होते थे, जो कुछ भजन या अन्य प्रकार के गानों का निर्माण करके गांव और कस्बों में सुनाने का कार्य करते थे और उन्हें लोग ध्यान से सुना करते हैं। ये लोकगीत काफी कर्णप्रिय होते थे और आज के समय में भी इसकी प्रासंगिकता है। लोग आज भी रेडियो या दूरदर्शन पर लोकगीत सुनना पसंद करते हैं क्योंकि वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता है।

संगीत

संगीत का उपयोग भी प्राचीन काल से चला आ रहा है संगीत भी पारम्परिक संचार माध्यम का एक प्रकार है। इस पारम्परिक संचार के माध्यम के कारण आज के वर्तमान समय में संगीत की प्रासंगिकता देखने को मिलती है। भारत जैसे देश में संगीत के कई प्रकार है इसका उपयोग भरपूर किया जा रहा है खासकर फिल्मों में ज्यादा उपयोग होता है।

नृत्य

नृत्य प्राचीनकाल से ही चलन में है यह भी पारम्परिक संचार माध्यम का एक प्रकार है इसके द्वारा भी पारम्परिक संचार को क्रियाशील किया जा सकता है। नृत्य व्यक्ति का मनोबल बढ़ाता है यह स्वास्थ्य के लिये भी अच्छा साबित हो रहा है। नृत्य का उपयोग प्राचीन समय में राजा-महाराजा अपने महलों में नृत्यों को रखते है जब वे युद्ध जीतकर वापस आते थे तब या किसी खुशी के मौके पर नृत्य का आयोजन करते थे इसमें तरह-तरह के नृत्य के आयोजन किये जाते थे जो आज भी प्रचलन में है इनका उपयोग पारम्परिक संचार में किया जा रहा है

कठपुतली

कठपुतली एक पारम्परिक संचार माध्यम है इसके द्वारा कहानी या किसी भी प्रकार का एक सामाजिक सन्देश दिया जाता है। कठपुतली का ज्यादातर उपयोग राजस्थान में किया जाता है यह वहां की एक पहचान है कठपुतली नृत्य भी किया जाता है। कठपुतली के द्वारा प्राचीन समय में कई प्रकार से रामलीला, श्रीकृष्णलीला का मंचन किया जाता है। इसमें एक व्यक्ति या दो व्यक्ति कठपुतली का मंचन करने समय एक बाक्स में अपनी उंगलियों में धागों के माध्यम से कठपुतलियों को बांध लेते हैं और उन्हें अपने इशारों के माध्यम से चलाते हैं साथ ही ढोल व संगीत के माध्यम से साथ ही संगीत भी देते हैं और कुछ कहानी भी कहते जाते हैं जिन्हें लोग ध्यान से देखकर कुछ शिक्षा ग्रहण करते हैं। कठपुतली अपने आप में पारम्परिक संचार माध्यम की एक कला है जिसके माध्यम से संचार को अपने अनुसार समझा जा सकता है। संचार एक ऐसा माध्यम है जिसे पारम्परिक माध्यम में अलग-अलग तरीके से समझा जा सकता है।

चित्रकला प्रदर्शनी

चित्रकला व प्रदर्शनी के माध्यम से भी पारम्परिक संचार का उपयोग किया जा सकता है पारम्परिक संचार एक ऐसा संचार माध्यम है जिसके द्वारा प्राचीन समय में जो भी होता था उसे चित्र बनाकर उकेरा जाता था इस प्रकार से भी पारम्परिक संचार के माध्यम से सामाजिक सन्देश भेजे जा सकते हैं। इन चित्रों की अगर प्रदर्शनी लगी दी जाती है तो यह जनसंचार का कार्य करने में मदद देते है। प्रदर्शनी का उपयोग इसलिये किया जाता है ताकि इसे देखकर लोग कुछ समझ सके और हमारी परम्परा भी बनी रही।

नुक्कड़ नाटक

नुक्कड़ नाटक से हम एक प्रकार का सामाजिक सन्देश दे सकते हैं और इसकी प्रतिपुष्टि भी

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तुरन्त मिलने की सम्भावना रहती है। नुक्कड नाटक का उपयोग इसलिये किये जाता है ताकि किसी भी सामाजिक सन्देश या अन्य प्रकार के सन्देश को जनता तक सीधे तौर पर रूबरू कराया जाता है। पारम्परिक संचार का यह एक पुराना माध्यम रहा है जिसके माध्यम से पारम्परिक संचार किया जाता है। प्राचीन समय में जब कोई भी शिक्षा का पाठ देना होता था तब ढोल बजाकर लोगो को एकत्रित किया जाता था और कुछ कलाकार होते थे जो समय-समय पर अपने संवाद बोलते थे और साथ ही पार्श्व संगीत भी बजाया जाता था। इसकी प्रतिपुष्टी तत्काल देखने को मिल जाती थी। इस प्रकार से नुक्कड नाटक के माध्यम से सामाजिक या सामान्य सा सन्देश लोगो में सीधे दिया जा सकता है।

निष्कर्ष

पारम्परिक संचार का उपयोग प्राचीन समय से चला आ रहा है वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिता आज भी मौजूद है क्योंकि पारम्परिक संचार का उपयोग हमारे दैनिक जीवन में कही न कहीं हो रहा है जिसके कारण आज भी हम इस पारम्परिक संचार के माध्यम से जुडे हुए है। पारम्परिक संचार से एक बेहतर प्ररकार का संचार किया जा सकता है इसका उपयोग इतना फायदेमंद है कि इससे कोई भी बात जनता तक सीधे तौर पर प्रेषित कर सकते है जैसे अगर कोई सरकारी योजना उसे जनता तक पंहुचाने के लिये संचार का उपयोग तो करते हैं साथ ही उसमें पारम्परिक संचार का उपयोग कर आसानी से योजना के बारे में जानकारी जनता तक आसानी से प्रेषित की जा सकती है। इसमें नुक्कड़ नाटक, कठपुतली, नाटक, संगीत या लोकगीत आदि के माध्यम से अपनी बात को रखा जा सकता है। पारम्परिक संचार माध्यम पीढ़ी दर पीढ़ी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिल रहा है। यह महत्वपूर्ण है और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता है इसके उपयोग से एक बेहतर सन्देश लोगों तक जाता है। जनसंचार और ग्रामीण जीवन में पारम्परिक संचार माध्यम के उपयोग से ग्रामीण जीवन स्तर का बढ़ा है आज भी जनसंचार के रूप में ग्रामीण लोग पारम्परिक संचार का उपयोग करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 दुबे श्यामचरण, संचार और विकास, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, 1986

2 उदयभान, रचना प्रियदर्शिनी, नीरज कुमार भारती, गीता धारीवाल, मुकेष बोरा एवं राजन कुमार शर्मा, जनसंचार एवं पत्रकारिता, अरिहन्त पब्लिकेशन (इण्डिया) लिमिटेड, 2013

3 राव डॉ.त्रिभुवन, जनसंचार माध्यम: चुनौतियां और दायित्व, युनिवर्सिटी बुक हाउस नई जयपुर 2013

4 गुप्ता आर, जनसंचार एवं पत्रकारिता - पेपर द्वितीय एवं तृतीय, रमेश पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 2012

5 तिवारी डॉ..अर्जुन, आधुनिक पत्रकारिता, विवि प्रकाशन, 2005

6 शर्मा डॉ..अशोक कुमार, आधुनिक पत्रकारिता चुनौतियां और सम्भावनाएं, डायमंड बुक्स 2011

7 सरदाना चन्द्रकान्त, जनसंचार कल आज और कल, ज्ञान गंगा प्रकाशन 2007

8 कुमार सुरेश, इन्टरनेट पत्रकारिता, टी.एस. बिष्ट तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, 2011